गीत

राहुल द्विवेदी 'स्मित'

'गीत' साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है- यदि ऐसा कहा जाये तो यह अतिशयोक्ति न होगी। शायद इसका सबसे बड़ा कारण यह भी है कि जब मानव सभ्यता के विकास के क्रम में मनुष्य अपने विविध दैनिक कर्मों में संलग्न रहा होगा तो सहज ही उसके मन से कुछ गेय स्वर सहज फूटे होंगे। जैसे- चरवाहे पशुओं के चराने के दौरान, महिलाएँ दैनिक गृह कार्यों के दौरान, किसान कृषि कार्यों के दौरान कुछ न कुछ गुनगुनाते रहे। सम्भवतः इसीलिए प्रत्येक संस्कृति में लोकगीतों का प्रचलन सदैव से रहा है। इसीलिये गीत को मस्तिष्क से अधिक हृदय का विषय माना गया है। अतः हम कह सकते हैं कि सम्वेदनाओं के ज्वार से हृदय के तारों के झंकृत होने से उत्पन्न रागात्मक स्वर ही गीत बनकर प्रस्फुटित होते हैं।

संसार की सर्वाधिक प्राचीन एवं सम्पन्न सुदीर्घ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक परम्परा भारतीय परम्परा ही रही है। संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथों में भारतीय धर्म शास्त्रों को ही उल्लेखित किया जाता है, जिसमें ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है। ऋग्वेद की ऋचाएँ गेय हैं। ऋग्वेद संहिता में 10600 छंदों में 1028 भजनों (सूक्तों) का वर्णन है। ऋग्वेद के अतिरिक्त सामवेद का भी वर्णन यहाँ प्रासंगिक होगा। अतः गीत परम्परा भारतीय संस्कृति में बहुत ही प्राचीन परम्परा रही है। जिसका स्वरूप भाषा के स्वरूप परिवर्तन के साथ बदलता रहा है। समय, भाषा, परिस्थिति इत्यादि के विविध परिवर्तनों को देखता, सहता गीत आत्मा द्वारा बदले जाने वाले शरीर रूपी वस्त्रों की भाँति अपने रूप, रंग, आकार इत्यादि को बदलने के बावजूद भी आत्मा से आज भी साश्वत स्वरूप में है।

गीत वेदव्यास, कालिदास, विद्यापति, कबीर, तुलसी, सूर, मीराबाई, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, बच्चन, गोपालदास नीरज, रामऔतार त्यागी, कुँअर बेचैन, देवल आशीष, रामानुज त्रिपाठी इत्यादि अनेकानेक गीत सेवकों से गुजरता हुआ आज धीरज श्रीवास्तव, अवनीश त्रिपाठी, सुनील त्रिपाठी, करन सिंह परिहार, ज्ञानप्रकाश 'आकुल', राघव शुक्ला जैसे नई पीढ़ी के गीतकारों तक आ पहुँचा है। मेरी दृष्टि में गीत विधा के विकास के इस क्रम में छायावादी युग को क्रान्तिकारी परिवर्तनों का युग कहा जा सकता है, जहाँ मानवीय सम्वेदनाओं की अभिव्यक्ति हेतु प्रकृति के विविध प्रतीकों का सहारा लिया गया, जिसने गीत को और अधिक रचनात्मक बनाया। जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटकों में गीतों का प्रयोग नाटकों के लालित्य को शिखर देता है। महादेवी वर्मा के गीतों ने उन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' बना दिया। यद्यपि गीत आगे चलकर परिवर्तन की गतिशील श्रृंखला में कलात्मकता के इन्हीं प्रयोगों के साथ नवगीत का स्वरूप लेकर भी आगे बढ़ा। प्रयोग और विकास यह गति भी शाश्वत है जो कभी रुकेगी नहीं, किन्तु गीत की आत्मा सदैव ही अपने मूल स्वरूप में ही विद्यमान रहेगी।

'------' वेब पत्रिका का यह गीत विशेषांक आज की पीढ़ी के कुछ सशक्त गीतकारों के गीतों से सुरभित है। आशा है आज की पीढ़ी के कुछ अच्छे गीतकारों से सुधी गीत प्रेमियों को परिचित कराने के उद्देश्य से किया गया हमारा यह प्रयास सभी को पसंद आयेगा। इस पहल के सूत्रधार, सम्पादक श्री सुरजीत सिंह मान जलाइया जी एवं संरक्षण धीरज श्रीवास्तव जी को इस उकृष्ट पहल हेतु अनेकानेक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।